Dr. Raj Gopal.
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U)
Mail ID :- rajgopal7755@gmail.com

Topic :- The Second Noble Truth (Praditya samutpada)
द्वितीय आर्य सत्य (प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धान्त)

गौतम बुद्ध ने द्वितीय आर्य सत्य मे दुःख के कारण की विवेचना की है। उनका मानना था कि संसार की कोई घटना अकारण नहीं होती है। अगर दुःख उत्पन्न होती है तो उसका भी कोई कारण है। इस प्रकार से कार्य-कारण सिद्धान्त के आधार पर उन्होने दुःख के कारणों का पता लगाया। इस सिद्धान्त को बौद्ध दर्शन में प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धान्त कहते हैं। यह दो शब्दो के मेल से बना है; 'प्रतीत्य' और 'समुत्पाद'। प्रतीत्य का अर्थ है किसी वस्तु के उपस्थित होने पर (आश्रित), समुत्पाद का अर्थ है किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति। इस प्रकार प्रतीत्यसमुत्पाद का शाब्दिक अर्थ होता है एक वस्तु की उपस्थित होने पर किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति। 'अ' के रहने पर 'ब' की उत्पत्ति। इस प्रकार से प्रतीत्यसमुत्पाद यह प्रमाणित करता है कि प्रत्येक कार्य अपने कारण पर आश्रित होता है।

बुद्ध ने दुःखों के कारण की खोज की प्रक्रिया मे 12 कड़ियों वाली एक लम्बी शृंखला का खोज किया। जिसकी प्रथम कड़ी 'जरा-मरण' है और अंतिम कड़ी अविद्या है, यही दुःखों का मूलभूत कारण है। बुद्ध ने संसार के सभी दुःखों को सांकेतिक रूप से जरामरण कहा है। जरा का अर्थ 'वृद्धावस्था' और मरण का अर्थ 'मृत्यु' है।

Scanned with CamScanner

लेकिन बुद्ध ने जरा-मरण को संसार के समस्त दुःख रोग, शोक, निराशा आदि का संकेत माना है। कारणता के नियम के अनुसार प्रत्येक घटना का कोई कारण होता है। बुद्ध के अनुसार जरा-मरण का कारण 'जाति' है। जाति का अर्थ होता है जन्म ग्रहण करना। अर्थात जन्म ग्रहण करने के कारण मानव को सांसारिक दुःख का सामना करना पड़ता है। पुनः जाति का कारण 'भव' है। 'भव' जन्म ग्रहण करने की प्रवृत्ति या जन्म ग्रहण करने की इच्छा है। इस प्रकार से मानव जन्म ग्रहण करने की इच्छा के कारण ही मानव जन्म ग्रहण करता है। प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार भव का कारण 'उपादान' है। सांसारिक वस्तुओं में आसक्त रहने की चाह को उपादान कहते हैं। इस प्रकार से विषयों में लिपटे रहने की अभिलाषा उपादान है। उपादान का कारण 'तृष्णा' है। तृष्णा का अर्थ होता है इन्द्रिय सुख ग्रहण करने की तिव्र इच्छा। अर्थात शब्द, स्पर्श रंग, रूप, गंध आदि विषयों को भोग करने की वासना। इन वासनाओं के कारण ही मानव सांसारिक विषयों के पिछे अन्धा होकर भागता रहता है।

पुनः तृष्णा का कारण 'वेदना' है। पूर्व की विषय भोग की अनुभूति को वेदना कहते हैं। यह अनुभव विषयों की भोग करने की वासना उत्पन्न करता है। पुनः वेदना का कारण स्पर्श है। इन्द्रियों का विषयों के साथ जो संपर्क होता है उसे स्पर्श कहते हैं। स्पर्श का कारण 'षडायतन' है। पाँच ज्ञानेन्द्रिय एवं मन के संकलन को षडायतन कहते हैं। इन सभी के माध्यम से विषयों के साथ संपर्क होता है। षडायतन का कारण 'नामरूप' है। गर्भस्थ भ्रुण के शरीर और मन। मन और शरीर के संयुक्त को नामरूप कहा जाता है। इन्द्रियों का निवास शरीर और

Scanned with CamScanner

मन में होता है। यदि नामरूप का अस्तित्व नहीं होगा तो षडायतन में वर्णित उपरोक्त 6: इन्द्रियों का प्रादुर्भाव नहीं होगा। नामरूप का कारण विज्ञान को चेतना है। गर्भावस्था में भ्रूण के शरीर और मन का विकास चेतना के कारण ही होता है। विज्ञान का कारण 'संस्कार' है। अर्थात पूर्व जीवन में की गयी धर्म प्रवृत्तियाँ जो संस्कारों के रूप में संचित है। पुनः संस्कार का कारण अविद्या है। अविद्या अर्थात जो वस्तु जैसी है उसको उस तरह न समझकर अन्यथा समझना अविद्या है।

संसार के सभी वस्तु क्षणिक दुःखद, काल्पनिक एवं ज्ञेय है, उन्हे स्थायी, सुखद, वास्तविक एवं ज्ञेय समझना अविद्या है। इस प्रकार से वस्तुओं का यथार्थ स्वरूप को नहीं जानना अविद्या है। यह अविद्या ही दुःखों (जरा-मरण) का मूल कारण है। बुद्ध ने दुःखों का मूल कारण अविद्या को मानकर भारत के दार्शनिकों की परम्परा का पालन किया है। सांख्य, न्याय, वैशेषिक शंकर और जैन इत्यादि दर्शनों में भी दुःखों का मूल कारण अविद्या को ही माना गया है।

प्रतीत्यसमुत्पाद को अनेक नामों से संबोधित किया गया है। इसे द्वादश निदान चक्र, संसार चक्र, दुःख चक्र, जरा-मरण चक्र आदि भी कहा जाता है। यह सिद्धान्त दुःख का कारण पता लगाने के लिए बारह कड़ियों की विवेचना करता है। इसलिए इस सिद्धान्त को द्वादश निदान भी कहते है। यह सिद्धान्त मानव के संसार में आवागमण की व्याख्या करता है। इस सिद्धान्त को जरा-मरण चक्र भी कहा जाता है। क्योंकि यह मनुष्य के जीवन मरण चक्र को निश्चित करता है। इसे धर्मचक्र भी कहा जाता है, क्योंकि यह धर्म का स्थान भी ग्रहण करता है। बुद्ध स्वयं कहते है, जो प्रतीत्यसमुत्पाद को जानता है वह धर्म को जानता है। जो धर्म को जानता है वह प्रतीत्यसमुत्पाद को जानता है।

Scanned with CamScanner